[This question paper contains 4 printed pages]

Your Roll No. : .....

Sl. No. of Q. Paper : **1066** **H**

Unique Paper Code : 205102

Name of the Course : **B.A.(Honours) Hindi**

Name of the Paper : प्राचीन और पूर्व मध्यकालीन कविता

Semester : I

Time : 3 Hours ***Maximum Marks : 75***

छात्रों के लिए निर्देश :

(1) इस प्रश्न-पत्र के प्राप्त होने पर तुरंत शीर्ष पर अपना रोल नंबर लिखें।

(2) **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. अमीर खुसरो की काव्य-भाषा पर विचार कीजिए। 15

अथवा

विद्यापति की सौंदर्य चेतना का विश्लेषण कीजिए।

2. 'कबीर समाज सुधारक पहले थे कवि बाद में' - इस कथन की युक्तिसंगत समीक्षा कीजिए। 15

अथवा

कुतुबन की 'मृगावती' के भाव-सौदर्य पर प्रकाश डालिए।

P.T.O.

3. तुलसी के काव्य में समन्वय-भावना को स्पष्ट कीजिए। 15

अथवा

'मीरा के काव्य में परम्परा के प्रति विद्रोह का स्वर सुनाई देता है' - इस कथन का तर्कसम्मत उत्तर दीजिए।

4. किन्ही **दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 2×7.5=15

(क) पथ-गति पेखल मो राधा।
तखनु क भाव परान पए पीड़लि,
रहल कुमुद-निधि साधा।।
ननुआ नयन नलिनि जनि अनुपम,
बंक निहारइ थोरा।
जनि सृंखल में खगबर बाँधल।।
दीठि नुकायल मोरा।।
आध बदन ससि बिहसि देखाओल,
आध पीहलि निअ बाहू।
किछु एक भाग बलाहक झाँपल,
किछुक गरासल राहू।।

(ख) जामंण मरण ए द्वै थाके, एक न थाकी माया।
चेति चेति मेरे मन चंचल, जब लग घट मैं सासा।
भगति जाव पर भाव न जइयौ, हरि के चरन निवासा।
जे जन जांनि जपै जग जीवन, तिनका ग्यांन न नासा।
कहै कबीर वै कबहूँ न हारैं, जांनि न ढारै पासा।

(ग) अबलौं नसानो, अब न नसैहों।
राम-कृपा भव निसा सिरानी जागे फिरि न डसैहों।।
पायो नाम चारूचिंतामनि, उर कर ते न खसैहौं।
स्यामरूप सुचि रूचिर कसौटी, चित-कंचनहि कसैहौं।।
परबस जानि हँस्यो इन इन्द्रिन, निजबसहै न हँसैहौं।
मन-मधुकर पन कै तुलसी रघुपति-पद-कमल बसैहौं।।

(घ) "बूझत स्याम कौन तू गौरी।
कहाँ रहति, काकी है बेटी, देखी नहीं कबहूँ ब्रज खोरी।।
काहे कौ हम ब्रज-तन आवति खेलति रहहि आपनी पोरी।
सुनत रहतिं स्रवननि नँद-ढोंटा करत फिरत माखनद दधि चोरी।।
तुम्हरौ कहा चोरी हम लैहँ खेलन चलौ संग मिलि जोरी।
सूरदास प्रभु रसिक-सिरोमनि बातनि भुरइ राधिका भोरी।।"

5. किन्ही **दो** का रचना-कौशल (लगभग **150** शब्दों में) निर्देशानुसार लिखिए : 2×7.5=15

(क) "म्हाँ गिरधर रंग राती।
पंचरंग चोला पहूरया सखी म्हाँ, झिरमिट खेलण जाती।
वाँ झिरमिट माँ मिल्यो साँवरो, देख्याँ तण मण राती।
जिणरो पियौ परदेस बस्याँरी, लिख लिख भेज्याँ पाती।
म्हारा पियाँ म्हारे हीयड़े बसताँ णा आवाँ णा जाती।
मीरा रे प्रभु गिरधर नागर मग जोवाँ दिण राती।।"
(मीरा की प्रेमभक्ति)

3. तुलसी के काव्य में समन्वय-भावना को स्पष्ट कीजिए। 15

अथवा

'मीरा के काव्य में परम्परा के प्रति विद्रोह का स्वर सुनाई देता है' - इस कथन का तर्कसम्मत उत्तर दीजिए।

4. किन्ही **दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 2×7.5=15

(क) पथ-गति पेखल मो राधा।
तखनु क भाव परान पए पीड़लि,
रहल कुमुद-निधि साधा।।
ननुआ नयन नलिनि जनि अनुपम,
बंक निहारइ थोरा।
जनि सृंखल में खगबर बाँधल।।
दीठि नुकायल मोरा।।
आध बदन ससि बिहसि देखाओल,
आध पीहलि निअ बाहू।
किछु एक भाग बलाहक झाँपल,
किछुक गरासल राहू।।

(ख) जामंण मरण ए द्वै थाके, एक न थाकी माया।
चेति चेति मेरे मन चंचल, जब लग घट मैं सासा।
भगति जाव पर भाव न जइयौ, हरि के चरन निवासा।
जे जन जांनि जपै जग जीवन, तिनका ग्यांन न नासा।
कहै कबीर वै कबहूँ न हारैं, जांनि न ढारै पासा।

(ग) अबलौं नसानो, अब न नसैहौं।
राम-कृपा भव निसा सिरानी जागे फिरि न डसैहौं।।
पायो नाम चारूचिंतामनि, उर कर ते न खसैहौं।
स्यामरूप सुचि रूचिर कसौटी, चित-कंचनहि कसैहौं।।
परबस जानि हँस्यो इन इन्द्रिन, निजबसहै न हँसैहौं।
मन-मधुकर पन कै तुलसी रघुपति-पद-कमल बसैहौं।।

(घ) "बूझत स्याम कौन तू गौरी।
कहाँ रहति, काकी है बेटी, देखी नहीं कबहूँ ब्रज खोरी।।
काहे कौ हम ब्रज-तन आवति खेलति रहहि आपनी पोरी।
सुनत रहतिं स्रवननि नँद-ढोंटा करत फिरत माखनद दधि चोरी।।
तुम्हरौ कहा चोरी हम लैहँ खेलन चलौ संग मिलि जोरी।
सूरदास प्रभु रसिक-सिरोमनि बातनि भुरइ राधिका भोरी।।"

5. किन्ही **दो** का रचना-कौशल (लगभग **150** शब्दों में) निर्देशानुसार लिखिए : 2×7.5=15

(क) "म्हाँ गिरधर रंग राती।
पंचरंग चोला पहूरया सखी म्हाँ, झिरमिट खेलण जाती।
वाँ झिरमिट माँ मिल्यो साँवरो, देख्याँ तण मण राती।
जिणरो पियौ परदेस बस्याँरी, लिख लिख भेज्याँ पाती।
म्हारा पियाँ म्हारे हीयड़े बसताँ णा आवाँ णा जाती।
मीरा रे प्रभु गिरधर नागर मग जोवाँ दिण राती।।"
(मीरा की प्रेमभक्ति)

(ख) काहे को ब्याही विदेस रे,
लखि बाबुल मोरे।
हम तो बाबुल तोरे बागों की कोयल
कुहकत घर-घर जाऊँ, लखि बाबुल मोरे।
हम तो बाबुल तोरे खेतों की चिड़िया,
चुग्गा चुगत उड़ि जाऊं, लखि बाबुल मोरे।
हम तो बाबुल तोरे बेले की कलियाँ,
जो मांगे चली जाऊं, लखि बाबुल मोरे।
(शिल्पगत सौंदर्य)

(ग) ''जब हरि मुरली अधर धरत।
थिर चर, चर थिर, पवन थकित रहैं, जमुना-जल न बहत।।
खग मोहैं, मृग-जूथ भुलाहीं निरखि, मदन छवि छरत।
पसु मोहैं सुरभी बिथकित तृन दंतनि टेकि रहत।
सुक सनकादि सकल मुनि मोहैं ध्यान न तनक गहत।
सूरदास भाग हैं तिनके जे या सुखाहिं लहत।।''
(मुरली की महत्ता)

(घ) 'दिपइ' लिलार दुइजि ससि रेखा। उएउ मयंक 'मीन' जग देखा।
देखत नैनन्ह दिस्टि खुटाई। भानु सरग 'जनु उदिनल' आई।
बदन परेंज बुंद 'जस' तारा। चांद नखत लै उएउ 'अंकार'।
मनु दामिनि कौंधा लौकाई। 'चलें' धाइ 'हौं' परेउं भुलाई।
जोति लिलार भएउ उजियारा। चौंधि परेउं 'फुनि' किछु न संभारा।
देखि लिलार बिमोहेउं 'किछुव' न समुझेउं धाय।
'औटि' करेज लोहु भा पानी ओखद कहु 'किछ' माय।।
(सौन्दर्य वर्णन)